सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीतिअपार्टमेंट ,आई.पी.एक्सटेंशन,

पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: २०२५-२६

कक्षा:-8	विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक	पाठ:8 थोड़ी धरती पाऊँ

मौखिक कौशल

1. यह कविता पर्यावरण से संबंधित है।

2. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

3. कवि बहुत दिनों से थोड़ी जमीन खरीदने की सोच रहे थे।

4. कवि से चिड़ियाँ डरती हैं।

5. आज सभ्यता वहशी हो गई है।

6. कवि काले अक्षर की कोयल भेज रहे हैं।

लिखित कौशल

1. (क) कवि धरती पाकर उसमें बाग-बगीचे लगाना चाहते हैं।

(ख) कवि को धरती इसलिए नहीं मिल पाई क्योंकि चारों ओर बड़ी-बड़ी इमारतें बन गई हैं। कहीं भी खाली जगह नहीं है।

(ग) कवि सबसे पेड़ों को न काटने की विनती कर रहे हैं।

(घ) हम पेड़ों के संग बढ़ना, खुश रहना, इतराना तथा हिलना सीख सकते हैं।

2. (क) दुनिया को हरा-भरा रखते हैं

नहीं समझते जो, दुष्कर्मों

का वे फल चखते है।

(ख) बनी वहशी

पेड़ों को काट रही है

जहर फेफड़ों में भरकर

हम सबको बाँट रही है।

3. (क) इन पक्तियों का आशय यही है कि पेड़ों की एक-एक पत्ती हमारे लिए कीमती है क्योंकि ये हमारे सपनों को आधार देते हैं। इनकी एक शाखा कटने पर ये छोटे बच्चों के समान रोते हैं अर्थात् इन्हें भी दर्द महसूस होता है। इसलिए हमें पेड़ों का महत्व समझना चाहिए और इन्हें नहीं काटना चाहिए।

(ख) इन पक्तियों का आशय है कि अब चारों ओर काली कोयल के समान धुआँ ही धुआँ है। उसी दूषित वातावरण में अब जीने की आदत डालनी होगी।

मूल्यपरक प्रश्न

1. प्रस्तुत कविता हमें यही सीख दे रही है कि हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिए तथा अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए।

2. आज मानव पर्यावरण के लिए बहुत बड़ा खतरा बन चुका है। वह आए दिन प्रकृति का दोहन कर रहा है। जनसंख्या वृद्धि द्वारा, बड़ी-बड़ी इमारतें बनाकर, उद्योगों द्वारा जहरीली गैसें छोड़कर तथा पेड़ों को काटकर मनुष्य पर्यावरण को हानि पहुँचा रहा हैं।